ओमशांति! बच्चे यह तो जानते हैं कि ऊँचे ते ऊँचा भगवत गाया हुआ है और वो ऊँचे ते ऊँचा भगवत निराकार ही गाया हुआ है। उनके बच्चे भी निराकार। ऊँचे ते ऊँचा बाप और फिर वो निराकार है और उनके बच्चे भी निराकार है। तो दोनों रहने वाले भी निराकारी दुनिया में। ये है साकारी दुनिया। अभी ये तो बच्चे भी जानते हैं, सब कोई जानते हैं– उनका चित्र ही एक निराकार दिखलाते हैं। कभी भी परमपिता परमात्मा का कोई साकार या आकार दिखलाते ही नहीं हैं, होता ही नहीं है। क्योंकि ये सभी बुद्धि में अच्छी तरह से रहनी चाहिए जो समझाना भी आवे। महिमा भी उनकी है। बहुत ग्रंथ में भी है। यूँ तो गाया भी जाता है ऊँचे ते ऊँचा भगवत। अभी ये तो बच्चों को भी समझाया गया है कि ये रचना अनादि है। ये कभी बनी है क्या ? ड्रामा ने ये रचना को बनाया, रचना ने ड्रामा को बनाया, ईश्वर ने ड्रामा को बनाया। ये बात कभी उठनी नहीं है; क्योंकि इसको कहा ही जाता है ये ड्रामा अनादि है यानी ये जो बेहद का नाटक है ये अनादि है। ये किसने बनाया, ये कह नहीं सकते हैं। .... जिसने बनाया वो ड्रामा के वश कैसे हैं? इसलिए ये बहुत गुह्य बातें हैं जो पहले–2 बताना नहीं चाहिए। ये तो बाप बैठकर बच्चों को समझाते हैं। ये पूछते हैं ; क्योंकि तुम भी कहते हो वो है रचता, ये है रचना। अच्छा, उस रचता ने ये रचना कब बनाई? क्यों बनाई? ऐसे–2 प्रश्न पूछते हैं। तो इन प्रश्नों में सदैव उनको कहा जाता है– ये रचता और रचना, जो भी इसमें हैं, इसका खेल अनादि है। कब बनी, किसने बनाई– क्वेश्चन नहीं उठता है। कौन बतावें– किसने बनाई! जब कहते हैं अनादि है, चली आ रही है, चलती ही रहेगी। इस ड्रामा का न आदि कह सकते हैं, न अंत कह सकते हैं। हाँ, ये चक्कर कैसे फिरता है, ये बाप आकर समझाते हैं; इसलिए उसको कहा जाता है वो बीज–रूप है और उसको नॉलेज है। यानी मनुष्य सृष्टि का कोई तो बीज–रूप होना चाहिए ना। मनुष्य सृष्टि का बीज–रूप है और उनके लिए कहते भी हैं– सत् है, चैतन्य है। फिर उनकी महिमा करते हैं। कहते हैं ना– सत–चित्त–आनंद स्वरूप। स्वरूप भी कहते हैं। अभी स्वरूप तो बिल्कुल सहज समझना चाहिए बच्चों को कि जैसे हम आत्माएँ हैं तो हम कहते हैं कि बिन्दी मिसल है या स्टार मिसल है, तो ज़रूर ये समझना चाहिए वो भी तो ऐसे ही है। जैसे हम मनुष्य के तन में हैं, ये कर्मेन्द्रियाँ हैं, तो ज़रूर कहेंगे इनका बाप भी कर्मेन्द्रियाँ वाला है। देखो है ना बरोबर। कर्मेन्द्रियों को जब साकार ....इसको कहा जाता है 'बाबा'। देखो, है ना बाबा। ये आत्मा उनको बाबा क्यों कहती है? उसने इनको विख से जन्म दिया। अच्छा, फिर जब उनको पुकारते हैं– ओ गॉड फादर! तो फिर वो नहीं कहेंगे इसने हमको जन्म दिया। नहीं, वो तो है ही है सबका फादर। ऐसे नहीं कहेंगे कि उसने इन सभी आत्माओं को कब जन्म दिया। ये कह भी नहीं सकते हैं; क्योंकि ये है बुद्धि से विचार–सागर–मंथन करना, ये सब बातें समझनी, जो कभी कोई पूछे तो मूँझ न पड़े। ये भी समझाया जाता है कि ये तो शरीर को रचता है। वो आत्मा को दूसरा मिलता है; क्योंकि कर्मभोग है, 84 जन्म हैं। आत्मा को जब शरीर मिलता है, एक शरीर मिला एक जन्म, दूसरा मिला दूसरा जन्म, तीसरा मिला तीसरा जन्म, अभी आत्मा को ही मिलता है... क्योंकि आत्मा तो पहले है ना। आत्मा है वहाँ। वो तो है ही पवित्र। उसको ही कहा जाता है आत्मा जब वहाँ रहती है तो गोल्डन एज में है, सतोप्रधान है। ऐसे नहीं कि सिर्फ तुम्हारी, (बल्कि) सबकी; क्योंकि सब नई हैं ना। नई...कोई भी चीज़ होगी, ये बड़ा मकान है, कोई दूसरा छोटा मकान है, ये गलीचा है, ये भी नया है पुराना है, कोई भी चीज़ नई बनती है, कोई भी चीज़ लो, ये नया है, पुराना हो जाएगा, सड़ जाएगा। तो जो भी आत्मा वहाँ से आती है; क्योंकि अभी ज्ञान की बातें चल रही हैं, ये स्थूल बातें तो नहीं हैं, तो जो भी आत्मा आएगी, ये हम जानते हैं कि ये सब जो भी आत्माएँ हैं नम्बरवार जिस–2 धर्म की, ये सभी वहाँ सतोप्रधान हैं। हाँ, ये ज़रूर है कि हर एक को अपना पार्ट मिला हुआ है। हर एक की आत्मा को भी हम ऐसे कहेंगे कि इनको ऊँचा पार्ट मिला हुआ है। भले पवित्र हैं; परन्तु पार्ट तो सबको अलग–2 मिलेगा ना। ज़रूर कोई को राजा का, कोई को रंक का पार्ट। तो ऐसे है ना। ये तो तुम समझते हो कि सतयुग में कोई राजा भी बनेंगे, कोई रंक भी बनेंगे यानी प्रजा बनेगी। कम दर्जे वाला भी बनेंगे; क्योंकि ड्रामा तो कोई एक दर्जे वालों का नहीं बनता है। ड्रामा अनेक प्रकार के दर्जों वाला। तो देखो, ये कितना बड़ा ड्रामा है! अनेक प्रकार के धर्म हैं, अनेक प्रकार के... एक चित्र न मिले दूसरे से। फिर ऐसे थोड़े ही है कि ये कभी नया बनेगा, जो ये लोग कहते हैं कि आत्मा जाकर परमात्मा हो जाती है, ब्रह्म में लीन हो

जाती है। ये इतना बड़ा जो बेहद का ड्रामा है, जिनमें यही फीचर्स...। देखो, एक की फीचर न मिले दूसरे से। तो ज़रूर ऐसे कहेंगे ना कि फिर यही फीचर्स होंगे। देखो, क्राइस्ट आएगा तो भी फीचर्स तो वही होगा ना। तुम जानते हो श्री लक्ष्मी–नारायण का फीचर्स अभी भले चित्रों में कोई ने क्या बनाया है; परन्तु बनेगा तो फिर वही फीचर्स जो ड्रामा में कल्प पहले भी था। कृष्ण भी वही बनेंगे जैसे उनका...। अभी ये चित्र तो मनुष्य का बनाया है। हमारा कोई इनके ऊपर अटेंशन नहीं जाना चाहिए, न कथाओं के ऊपर, न किताबों के ऊपर, न कोई चीज़ के ऊपर; परन्तु है तो बाप फिर इनका वर्णन करके समझाते हैं। वो कहते हैं ना– भक्तिमार्ग के वेद,शास्त्र,ग्रंथ भी हैं ; परन्तु उनका अर्थ कोई नहीं जानते हैं। हैं, फिर होंगे। ऐसे भी नहीं है कि नहीं होंगे, फिर भी होंगे। फिर मैं आकर सभी वेदों,ग्रंथों,शास्त्रों, ये सृष्टि के आदि,मध्य,अंत का...। वो समझते हैं बच्चे कि बरोबर जो कुछ भी हम नहीं जानते थे, ये एकदम नई बात समझते हैं, जो दुनिया में कोई भी नहीं जानते हैं– न जिस्मानी, न रूहानी; क्योंकि ऐसे कोई है नहीं जो आकर कहे कि मैं तुम्हारा बाप हूँ, हम बच्चों को (यानी) आत्माओं को ज्ञान दे रहा हूँ और आकर समझे कि आत्मा ही हर बात में संस्कार धारण करती है। वो भले स्कूल में पढ़ती है। बैरिस्टरी का संस्कार धारण करती है। तो सब आत्मा में धारणा होती है, कोई शरीर में नहीं कोई चीज़ धारणा होती है। आत्मा में सभी धारणा होती है। आत्मा में ये सभी प्वाइंट्स ठहरती हैं जो इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कोर्ट में भी लड़ते हैं। संस्कार, ये सभी कायदे–कानून आत्मा धारण करती है। तो देखो, ये जो बच्चों को समझाते हैं, अभी समझते तो हो ना कि ये बिल्कुल राइट है। शरीर की कर्मेन्द्रियों में कोई चीज़ नहीं रहती है। नहीं, ये तो विनाशी है। संस्कार आत्मा को ले जाना है– पाप का, पुण्य का, पढ़ाई का भी। पिछाड़ी में जो बैरिस्टरी में संस्कार तीखे हो जाते हैं तो संस्कार ले जाते हैं, जाकर बैरिस्टर भी बन सकते हैं; परन्तु कहाँ–2 का कोई ऐसा कर्मभोग होता है तो फिर बदल भी जाते हैं; परन्तु बन सकते हैं। ऐसे नहीं कि नहीं बन सकते हैं। जैसे कि सिपाहियों के लिए बाबा ने बताया– देखो, लड़ाई के सिपाही होते हैं वो अंत मते सा गत। तो लड़ाई के मैदान में जाते हैं। फिर भी भले कहाँ भी जन्म ले करके ऐसे ही क्षत्रियों के कुल में जो फिर भी सिपाही बन जाते हैं, लड़ाई वाला बन जाते हैं; क्योंकि उनको फर्ज़ ही अंत में बस मारना और मरना। कोई तो मारना–मरने का पिछाड़ी में उनको ये...रहता है जो फिर जा करके... नहीं तो ये इतने लड़ाई के मनुष्य कोई होते थोड़े ही हैं। इनका भी जैसे कि एक कुल है। बड़ा भारी कुल है। तो ये भी संस्कार की बात है ना। ये बाप बैठकर कहते हैं कि सभी संस्कार आत्मा में ही रहते हैं। ...बाप ही आकर ये सब समझाते हैं। दूसरे ऐसे नहीं कहते हैं। कह ही नहीं सकेंगे। हम ऐसे परमात्मायें तुम आत्माओं को पढ़ाते हैं, कभी कह ही नहीं सकें; क्योंकि कहते हैं जैसे अहम् आत्मा सो परमात्मा। ततत्वम् कर देते हैं। ऐसे कभी (कोई) की ताकत नहीं है जो कह सके कि हम आत्मा सो परमात्मा हैं और परमात्मा बैठ करके पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं। वो समझते हैं कि हम हैं परमात्मा। आत्मा ने ये शरीर धारण किया है ; पर हैं हम फिर परमात्मा। फिर परमात्मा को याद करते–2 कि हम परमात्मा हैं, ब्रह्म हैं, वो आत्मा भी नहीं समझते हैं, ब्रह्म हैं, उनमें लीन हो जाएँगे। तो किसकी कितनी मत है, किसकी कितनी मत है। ये तो मतें अनेक हैं। तो बाप बैठकर सब बच्चों को अच्छी तरह से समझाते हैं कि तुमको तो अभी बुद्धि में रहा कि अभी बेहद का बाप, जो नॉलेजफुल है, जो जानी–जाननहार है, जो मनुष्य सृष्टि का बीज–रूप है, जो ज्ञान का सागर है, जिसको ही पतित–पावन कहा जाता है। कृष्ण को कभी कोई भी पतित–पावन नहीं कहेंगे। ये डिटेल में समझाना होता है ना, जब तुम लोग भाषण करते हो। ये भी तो भाषण कर रहे हैं ना; क्योंकि बाबा ऐसे तो भाषण करते भी हैं। ऐसे मत समझो (कि) नहीं करते हैं। देखो, जब वहाँ मेजर की कोठी में आए थे, तो आते थे, हम किसको कोई मना थोड़े ही करते हैं या कहाँ भी वहाँ करते तो कोई अच्छे आदमी अंदर चले आवे, उनको कोई मना थोड़े ही कर सकते हैं; क्योंकि पब्लिक हो जाती है। पब्लिक भाषण में लॉ मुजीब तो कोई भी अंदर आ सकते हैं। आ करके बैठ सकते हैं, खड़े हो सकते हैं। उनको कोई मना नहीं की जा सकती है कि नहीं, ये प्राईवेट है.... नहीं, पब्लिक जहाँ भी आते हैं, वहाँ बहुत भी आते थे ना, सब थोड़े ही अपने बच्चे आते थे। तो ऐसे हो सकता है। भाषण कर सकते हैं। ऐसे नहीं है कि नहीं कर सकते हैं। बाप भी तो पहले–2 परिचय देंगे एकदम झट कि ऊँचे ते ऊँचा परमपिता परमात्मा बाप है तुम्हारा, जिसको तुम भक्तिमार्ग में याद करते हो। तुम्हारे दो बाप ..। बाप भी ऐसे ही शुरू करेंगे ना। ऊँचे ते ऊँचा भगवत उसको बाप कहा जाता है।

बस, शुरू ही करेंगे कि हर एक मनुष्य को भक्तिमार्ग में दो बाप हैं। एक, दुःख होता है तो बाप को याद करते हैं। बाबा ऐसे ही कहेंगे ना कि तुम लोग। बाबा कहते रहेंगे तुम लोग दुःख में सिमरन करते हो, सुख में नहीं करते हो। तुम जाते हो। बरोबर तुम भारतवासी जानते हो कि ये भारत स्वर्ग था, सुख ही सुख था। दुःख का नाम–निशान (नहीं) था। अभी तुम भारतवासी नर्कवासी बने हो। बाबा ऐसे कहेंगे ना, सबको तुम–2 करके। अभी तुम भारतवासी दुःखी हो। दुखी हो तो ज़रूर बाप है, उनको याद करते हो कि फिर आओ, आ करके हम पतितों का पावन करो। हमको आ करके फिर सुखधाम का मालिक बनाओ। अभी ये तो दुःख हो गया है। पीछे बाप बैठकर समझाएँगे, ये भी तो समझना चाहिए ना कि बाप तो बच्चों के लिए सुख ही स्थापन करेंगे। फिर ये तो जानते हो कि बाप आते ही हैं स्थापना करने। काहे की? ब्रह्मा द्वारा सुख की। तो ज़रूर ब्रह्मा भी तो यहाँ चाहिए ना, कोई सूक्ष्मवतन में तो नहीं चाहिए। ये ब्रह्मा जब पावन बन जाएगा तो सूक्ष्मवतन में फरिश्ता बन जाएंगे। चाहिए तो यहाँ ना। तो उनको भी ऐसे ही समझाना कि ऊँचे ते ऊँचा भगवत, याद करो बुद्धि में (कि वो) हमारा बाप है। सूक्ष्मवतन में ब्रह्मा,विष्णु,शंकर हैं। ...स्थापना होगी तो पहले यहाँ स्थापना होगी ना। स्थापना माना वो पावन दुनिया की स्थापना। तो पावन दुनिया यहाँ स्थापन होगी ना। पतित से पावन यहाँ बनना है। सतयुग में जाकर पतित ही नहीं होते हैं तो पावन कैसे बनेंगे! ये तो बिल्कुल अच्छी तरह से समझाया है कि पतित को पावन बनाने के लिए भगवान को यहाँ आना पड़ेगा। पावन दुनिया यहाँ स्थापन करनी होगी; क्योंकि पावन दुनिया में तो पावन ही जाएँगे ना। तो यहाँ ही पतित हैं। बाप को यहीं पतित दुनिया में आना पड़े। तो देखो, अभी पतित शरीर चाहिए। अब पतित वो चाहिए तो मैं किसका पतित शरीर लूँ? जो पहले पावन था, जो पतित बना है, मुझे पहले उनमें प्रवेश करना पड़े, जो वो पहले पावन बने। तो उनके साथ फिर दूसरे भी सुनेंगे–करेंगे। इसलिए मैंने कहा है कि ब्रह्मा द्वारा मैं स्थापना करता हूँ ना, तो प्रवेशता भी ब्रह्मा में। नहीं तो भला किसमें प्रवेश करेंगे ? ये ख्याल करो। विष्णु में प्रवेश करेगा? भले चित्र न भी हों तो भी ये तो कहेंगे ना। चित्र तो नहीं रखे रहते है ना। जहाँ भाषण होता था, कोई चित्र सामने थोड़े ही रखे हुए थे। अगर होंगे तो भी पिछाड़ी में लगाए हुए होंगे; परन्तु बाबा चित्र को तो फिर नहीं देखते हैं ना। फिर समझाते हैं कि परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। ऊँचे ते ऊँचा ठहरा ना। ब्रह्मा द्वारा क्या स्थापना करेंगे? नई दुनिया। तो ज़रूर नई दुनिया में पहले ब्राह्मण चाहिए। ये तुम जानते हो कि ये यज्ञ है। इसको रुद्र ज्ञान यज्ञ कहा जाता है, कृष्ण ज्ञान यज्ञ नहीं किया जाता है। सतयुग में कोई भी यज्ञ होता नहीं है। ये तो समझाया गया है कि वहाँ सुख ही सुख है। कृष्ण तो सतयुग में है। यहाँ कहाँ से आएंगे ? ये तुम बच्चों की भूल है। ड्रामा के प्लैन अनुसार तुम्हारी भूलें होती ही हैं। भूल तुम्हारे से ये रावण कराते हैं, जिसको तुम लोग जानते नहीं हो। जानते हो बरोबर तुम उनको बरस–2 जलाते हो; क्योंकि तुम्हारा दुश्मन है। बिल्कुल बड़ा दुश्मन है; क्योंकि वही तो तुमको दुःख देते हैं, दुःख में ले जाते हैं ना। तो जो दुःख देते हैं उनकी एफीजी जलाई जाती है। तो देखो, और कोई भी मनुष्य का, जो दुःख देते हैं, लड़ते हैं, जैसे औरंगजेब था, फलाना था, तो चलो उस समय में कोई ने वो एफीजी निकालकर जलाई और खतम हो गया। वो खतम हो गया, पीछे उसको क्या करेगा! और ये मुट्ठा खतम ही नहीं होता है। तुम्हारा पक्का दुश्मन है। ये बरस–2...। इससे सिद्ध होता है कि ये दुश्मन तुम्हारा जाता नहीं है। जब इनकी ये बंद करेगा, जबकि ये विनाश होगा। इस दुनिया का विनाश हो तब भारतवासी... क्योंकि है भारतवासियों का दुश्मन। रावण भारतवासियों का दुश्मन, राम भारतवासियों का सज्जन। तो याद करते हैं ना। वो कहते ही ऐसे हैं। दुःख हर्ता–सुख कर्ता कहा ही जाता है उनको। याद भी उनको करते हैं ना। ये जो पतित–पावन, पीछे रघुपति राघव कह देते हैं ना। ये बिचारे उसमें भूल करते हैं। तो बाप बैठकर समझाते हैं, सबको बुद्धि में तो रहे पहले–2 ऊँचे ते ऊँचा बाप, पीछे सूक्ष्मवतन; क्योंकि तीनों लोकों को जानना चाहिए। पीछे है स्थूल वतन। स्थूल वतन में पहले–2 है ही सतयुग। सतयुग में हैं देवी–देवताएँ। ये नटशेल में उनको चक्कर ज़रूर बुद्धि में बैठाना चाहिए। जब भी बड़ी सभा होती है। सभा में कभी भी कोई प्रश्न–उत्तर नहीं। वो तो समझा देना है। तुम इसलिए वहाँ चेयर पर बैठाते हो कि कोई भी प्रश्न–उत्तर न पूछे। उनको बतावें कि अभी बैठो। प्रश्न पूछेगा तो हंगामा हो जाएगा। शांत करके पूछो, प्रश्न पूछना है तो आ करके पूछो। भले बैठ जाओ। जब क्लास पूरा हो तब जो तुमको प्रश्न पूछना है वो तुमको एकान्त में समझाया

जाएगा; क्योंकि प्रश्न तुम्हारा है, कोई सबका नहीं है। तुम्हारें में है। ऐसे तो सबमें बहुत प्रश्न होगा, सब हल्ला मचा देंगे। जब कोई बड़ी सभा होती है तो पहले–2 उनको सारी सृष्टि का समाचार बता देना है– ऊँचे ते ऊँचा, पीछे सूक्ष्म वतन में, पीछे स्थूल वतन में तो पतित–पावन। अभी तो पतित दुनिया है। यूँ तो सतयुग में लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। यहाँ रूप बदल रहे हैं। यह भारत में सतयुग में लक्ष्मी–नारायण का राज्य था, उनको ही स्वर्ग कहा जाता है और स्वर्ग तो रचता ही है बाप। अच्छा, अभी ये तो तुम लोग याद करो कि ऊँचे ते ऊँचा, फिर सूक्ष्मवतन, फिर आओ स्थूलवतन में। स्थूलवतन में तुम जानते हो कि सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलहयुग। अभी सतयुग में तुम जानते हो कि पहले–2 सूर्यवंशी राज्य था। देखो, ये सबमें नए–2 को पहले ये बुद्धि का चक्कर...। चक्रधारी तो बनाना है ना। पीछे है उनको कि यहाँ पतित ज़रूर बनना पड़ता है, पावन ज़रूर बनना पड़ता है। एक जैसे कि तुम उन सबकी बुद्धि में जो भरते हो, तो जो–2 भी अपने ब्राह्मण कुल के होंगे, जैसे–2 होंगे, वैसे उनकी बुद्धि में कुछ टच ज़रूर होगा। तो पहले–2 एकदम ऊँचे ते ऊँचा; क्योंकि शिवाय नमः, परमात्माय नमः। ये तो पहले–2 सब कोई कहते ही हैं। तुम तो परमात्माय नमः नहीं कहते हो, तुम तो परमात्मा का परिचय देने वाले ठहरे। वो तो नमः कह देते हैं, परिचय को जानते नहीं हैं। सबको पहला–2 बाप का परिचय देना पड़ता है कि ऊँचे ते (ऊँचा)। बाबा ऐसे कहते हैं ना दो बाप हैं। दो बाप भी इससे सिद्ध कर सकते हो कि ऊँचे ते ऊँचा भगवत, जो सबका बाप कहा जाता है, निराकार है। सभी निराकार आत्माओं का वो निराकार बाप ठहरा। तभी कहा जाता है कि ये सभी ब्रदर्स हैं। ज़रूर ब्रदर्स हैं तो सभी आत्माएँ आपस में ब्रदर्स हैं और परमात्मा को सभी ब्रदर्स दुःख में सिमरन करते हैं। हर एक जहाँ–तहाँ– ओ गॉड फादर, ओ परमपिता परमात्मा, पिता परमात्मा। 'परम' अक्षर क्यों? वो लोग 'परम' अक्षर एड नहीं करते हैं। वो कहते हैं हैविनली गॉड फादर यानी आकर हैविन स्थापन करने वाला। वो कहते तो ज़रूर हैं कि परे–ते–परे रहने वाला, निराकारी दुनिया में, इनकारपोरियल वर्ल्ड में रहने वाला। उन सबको याद आएगा। तो ऊँचे ते ऊँचा वो; क्योंकि वो सबका बाप है। फादर कहा जाता है। तुमको समझाया जाता है ना वो हुआ फादर। अच्छा, पीछे आओ सूक्ष्म वतन में। ये याद कर दो कि सबका फादर है वो निराकार। हम सब वास्तव में वहाँ के ही रहने वाले हैं और हमारा स्वधर्म वहाँ है ही शांत। पीछे जब इसमें आते हैं, तभी कर्मेन्द्रियाँ मिलती हैं जो पार्ट बजाते हैं। अभी यहाँ कोई कहे कि मुझे शांति मिले।.... पार्ट बजाना है। कोई शांत करके थोड़े ही बैठेंगे, शांत–2 कहते हैं। तो शांति, जिसको फिर तुम लोग पीस कहते हो, वो पीस शांतिधाम। वो तो जब विनाश होगा, सब वहाँ पीसफुल दुनिया में चले जाएँगे। पीस और कहाँ है? पीस के साथ फिर सुख। वो प्लेन पीस। वो पीस के साथ फिर सुख, जिसको सुखधाम कहा जाता है। अभी ये दोनों, उसको कहा ही जाता है मुक्ति, उसको कहा जाता है जीवनमुक्ति। उसको कहा जाता है गति और उसको कहा जाता है सद्गति। ....अभी सद्गति तो है सतयुग में। दुर्गति है कलहयुग में। अभी आओ तो हम समझावें कि सद्गति और दुर्गति कैसे होती है। भारत की बात है ना। भारत में ही स्वर्ग है। अभी भारत में नर्क है। इसको ही दुर्गति कहेंगे उनको ही सद्गति कहेंगे। अभी वो तो ऊँचे ते ऊँचा रहा। अभी वो तो हमको सद्गति देते हैं। बरोबर स्थापना करते हैं और देखो सतयुग–त्रेता का राज्य हमको मिलता है। आओ स्थूलवतन में, सतयुग–त्रेता, अच्छा पीछे द्वापर–कलहयुग आना ही है ज़रूर। अभी थोड़ा–2 दुःख शुरू। चीज़ पुरानी होनी है ज़रूर। झाड़ पुराना होना है। दुनिया पुरानी होनी है। तो देखो, उस समय से फिर पुरानी शुरू होती है और रावण का राज्य शुरू होता है, जिसको तुम हर बरस जलाते आते हो। अभी तुम बच्चों को तो मालूम नहीं है (कि) कब से जलाते आते हो। जब से ये आता है, देवताएँ भी वाममार्ग में चले जाते हैं, पतित बनना शुरू कर देते हैं। अभी बहुत पतित बन जाते हैं। भक्ति भी तब शुरू हो जाती है। ये जो भी समझो यहाँ हैं, अभी भी चल रही है द्वापर से ले करके, जबकि रावण की प्रवेशता है और जबकि ये वाममार्ग में जाते हैं तब फिर देखो गिरते ही जाते हैं। देखो, वो चढ़ती कला, फिर देखो उतरती कला। ये ड्रामा में सीढ़ी उतरते आते हैं। अभी वही जो सूर्यवंशी हैं वो चंद्रवंशी बनते हैं। नहीं तो आठ जन्म तो लेना पड़े या तो गिरना पड़े ना। आत्मा तो दूसरा शरीर ज़रूर लेगी ना। तो देखो, पहले–2 वो आठ शरीर सुख में लेती है। पीछे और नीचे दो कला होती है, फिर कम आते हैं। कोई एक की तो बात नहीं है ना। नहीं, सूर्यवंशी डिनायस्टी सो फिर बन जाती है चंद्रवंशी डिनायस्टी और वृद्धि को भी पाती जाती है; क्योंकि सृष्टि वृद्धि को भी

पाती जाती है। अच्छा, पीछे रावण की प्रवेशता होती है फिर द्वापर शुरू होता है। उसमें ये विकार हैं। थोड़ा दुःख होना शुरू हो जाता है। भक्तिमार्ग भी शुरू हो जाता है। पहले अव्यभिचारी भक्ति है, पीछे वो भक्ति भी वृद्धि को पाती है, तहाँ कि व्यभिचारी हो जाती है। व्यभिचारी क्यों कहते हैं? पहले–2 जिसने सुख दिया उनका मंदिर बनता है, शिव का। तो उनका अच्छा समय चलता है। पीछे ऐसे कहेंगे कि द्वापर में बहुत समय उनका...। पीछे ये देवताओं की पूजा होती है। तो बस, जो पूज्य थे, वही देखो पुजारी कैसे बनते हैं! वैसे वही बनते हैं ना; क्योंकि सारी डिनायस्टी को 84 जन्म लेना है। तो वृद्धि को पाती रहती है। तो ऐसे ये चक्कर फिरकर अभी देखो कलहयुग अंत आ गया। अभी अंत आ गया तो फिर सुख चाहिए, सतयुग चाहिए। तो ज़रूर जैसे दिन से रात होती है (तो) ये भी ऐसे ही है, कलहयुग के बाद जो रात है, घोर–अंधियारा है, कोई भी ज्ञान को नहीं जानते हैं। देखो, ये ज्ञान अभी बाप ने दिया हुआ है ना। तो हम तुमको इस सारी सृष्टि के चक्कर का ज्ञान देते हैं– कौन–2 हैं। सतयुग में पहले–2 लक्ष्मी–नारायण का राज्य है। वो इतनी बड़ी आयु होती है। रोना–पीटना नहीं होता है। भारत की फुल एज गाई जाती है। ...कम होती जाती है तहाँ कि अभी देखो ये आ गई; क्योंकि चक्कर लगकर अभी आ गई। देखो, सभी याद करते रहते हैं। आफतें आ गई हैं, झाड़ पुराना हो गया है और टाइम भी 5000 बरस पूरा हो आया है। जब वो शुरू होगा तो ज़रूर बाप आएँगे ना। तो बाप को बुलाया जाता है और बाप कहते हैं मुझे कहते भी हैं जब हम पतित बन जाते हैं तभी हमको पावन करने बाप को आना पड़ता है। तो देखो, अभी पावन करने के लिए, फिर कलहयुग को स्वर्ग बनाने और फिर जो हम मनुष्य देवता थे जो अभी असुर बन गए हैं उनको...। मैंने कल बोला था कि मैंने अख़बार पढ़ा था कि देवताओं और असुरों की लड़ाई लगी। ये जो अंग्रेजी लोग हैं, उन्होंने भी ऐसे ही लिखा है कि देवताओं और असुरों की लड़ाई। अभी देवताओं और असुरों की कभी लड़ाई थोड़े ही लगती है। तो देखो, कितनी मूँझ है। अभी उसमें दिखलाते भी हैं महाभारत की लड़ाई। अभी वहाँ असुर और देवता तो हैं नहीं। देवता तो कभी लड़ते ही नहीं हैं। भले बाबा कहते हैं, ये उसमें लिखा हुआ है कि ये मेरे दैवी गुणों वाले हैं, वो आसुरी गुणों वाले हैं। ये दैवी सम्प्रदाय, ये आसुरी सम्प्रदाय। तो देखो, दैवी माना देवता, आसुरी माना... तो इन्होंने इनकी लड़ाई वगैरह दिखलाई है; क्योंकि उसमें गाया तो हुआ ना; परन्तु हम लोग बोलते हैं कि वो राँग है। वो जो कहते हैं कि ये दैवी सम्प्रदाय है। वास्तव में ये कोई दैवी सम्प्रदाय नहीं है। वो बाबा फिर उन शास्त्रों को करेक्ट करते हैं कि बोलते हैं– नहीं, दैवी सम्प्रदाय यहाँ नहीं थी, ये ब्राह्मण सम्प्रदाय ; क्योंकि इनसे यज्ञ रचा गया। ब्राह्मण धर्म पहले–2 चोटी चाहिए। ये यज्ञ है। ब्राह्मण बनकर फिर ये देवता बनते हैं सो पढ़ाई से, योगबल से। लड़ाई कहें, फिर ये आपस में सब लड़ मरते हैं। अगर भारत में लड़ाई थी तो यवनों की और कौरवों की लड़ाई थी। यानी ये जो काँग्रेसी हैं। उनके साथ उनकी तो तैयारी है। हम तो योग सिखलाते हैं। हम लड़ाई कहाँ सिखलाते हैं ! हम तो अहिंसा परमो देवी–देवता धर्म। यानी अहिंसा किसको कहा जाता है? ये देवताओं में हिंसा थी नहीं। विकारी थे नहीं। बाप कहते हैं ना– काम महाशत्रु है। ये तुम्हारा बड़ा पुराना दुश्मन है, इन पर जीत पहनो। ये आदि,मध्य,अंत दुःख देने वाला है। तो पहले इनको जीतना पड़े ना। बाप तो ऐसे कहते हैं ना कि इन विकारों को अभी छोड़ो; क्योंकि देखो, भारत के ऊपर ये विकारों का ग्रहण है, काला हो गया है। अभी तुम जो दान (दो) विकारों का तो ग्रहण छूटे, भारत फिर वो हो जाएगा। अभी जो–2 करेगा सो पाएगा; क्योंकि सारी दुनिया तो सतयुग में नहीं चलेगी। भारत में भी पहले सूर्यवंशी, ये चंद्रवंशी। सो तो बहुत ही ढेर प्रजा बनती जाएगी। तुम जो भाषण करते हो उनमें बहुत सुनते रहते हैं जो प्रजा में आएँगे और जास्ती सुनते रहेंगे। अभी तो टाइम है। तुम सुनाते रहेंगे। तुम सुनाने वाले बहुत निकलेंगे। नए–2 देखो निकलते तो रहते हैं ना। बड़े अच्छे–2 निकलते रहते हैं। बड़ी अच्छी समझानी भी देते हैं। औरों को भी समझाते हैं। ये तो ज़रूर होता है। गरीब निवाज़ है। बाप ने समझा दिया है कि पहले–2 जब भी भाषण करो, मनुष्य को सारी सृष्टि बुद्धि में बिठाओ। ऊँचे ते ऊँचा, फिर सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन में ऐसे चक्कर लगता है। पीछे ये धर्म आते हैं, जिनसे हमारा कोई कनेक्शन नहीं है। भले लड़ाई–झगड़ा भी होता है;

परन्तु हार और जीत का खेल भारत का है। सुखधाम और दुःखधाम ये भारत के ऊपर सारा खेल है। ये पावन और फिर पतित, ये भारत के ऊपर ही खेल...। बाबा भी यहाँ आते हैं। बाबा का जन्म भी यहाँ मनाया जाता है। तो देखो, बाप आते ही हैं पतितों को पावन करने, सबको शांति और सुख देने। तो उनकी सारी दुनिया को मनाना चाहिए ना ; परन्तु कोई को पता ही नहीं है। शिवबाबा के बदली में गीता का भगवान कृष्ण रख दिया। तो भारत की वो जो महिमा होनी चाहिए, वो है नहीं। अच्छा, अगर महिमा होती तो फिर भारत में ये लड़ाई वगैरह कुछ लगता नहीं था। मुसलमान कहते थे कि ये तो हमारे बाप, जो हमको पतित–पावन बनाते हैं, ये तो उनकी धरनी है। हम वहाँ उस धरती के मनुष्यों के साथ बैठ करके लड़ें कैसे ? तुम्हारा बहुत मान होवे ; क्योंकि ये तो ... का है जहाँ हमारा जो पतित–पावन है, जो हमको सुख देने वाला है, जो हमको कब्र से निकालता है, परिस्तान में भेज देते हैं, ये तो उनकी जन्मभूमि है। इस जन्म भूमि को हम दुःख नहीं दे सकते हैं। जन्मभूमि में रहने वालों को हम दुःख नहीं दे सकते हैं। यह जन्मभूमि ऐसी पवित्र है एकदम। तो देखो, जैसे मक्का शरीफ है, अभी उनमें कोई लड़ाई थोड़े ही लगेगी। मनुष्य जाते हैं। वहाँ थोड़े ही लड़ाई लगनी चाहिए। वहाँ तो तीर्थ है ना, वो तो जाकर करते हैं। वहाँ लड़ाई की तो कोई बात नहीं है; परन्तु तो भी ये आपस में ये जो ब्राह्मण, मुसलमान... हैं, उनकी भी आपस में लड़ाई लग सकती है। ये भी भूल सकते हैं कि वाह ! ...तीर्थ पर हम आपस में कैसे लड़ते हैं; परन्तु नहीं, ये समय ही ऐसा हो गया है जो सब जगह में लड़ाई। उन तीर्थों पर देखो कभी लड़ाई लग जाएगी जहाँ जाते हैं। वो भी उनके तीर्थ हैं ना– जेरूसेलेम..। ये सभी खतम हो जाएगा। अर्थक्वेक्स होगी, लड़ेंगे–झगड़ेंगे, फिनिश हो जाएगा। जबकि यहाँ ही फिनिश होने का है, तो भी ये तो अविनाशी खण्ड है। यह तो तुम उनको समझा सकते हो कि यह भारत है प्राचीन अविनाशी खण्ड। यह कभी जाने वाला ही नहीं है। ये तो तुम सब जानते हो, जब सतयुग–त्रेता था, कोई भी धर्म नहीं था। तो ज़रूर भारत विश्व का मालिक था। दूसरा धर्म ही नहीं था तो ज़रूर एक ही कहेंगे कि विश्व का मालिक था और उसको ही पैराडाइज़ कहा जाता है। ..हैविन स्थापन करने वाला हैविनली गॉड फादर कहो या पैराडाइज़ स्थापन करने वाला...। वो 'हैविनली' अक्षर ठीक आता है ना। गाया हुआ है हैविनली गॉड फादर। अभी हम 'पैराडाइज़' अक्षर डालें तो ठीक नहीं लगता है। जैसे शिव भगवानुवाच। अभी हम रुद्र कहते हैं ना तो एकदम मूँझ जाते हैं। उसमें कृष्ण भगवानुवाच, फिर वहाँ रुद्र भगवानुवाच...। रुद्र नाम तो है नहीं। उनका नाम है शिव। पीछे बैठ करके रखा है। ये भाषाएँ तो बहुत बदल गई हैं ना, हर एक सब कुछ। तो बाप बैठकर समझाते हैं जब भी किसको समझाते हो तो पहले तो उनकी बुद्धि में यही बैठा दो– वो मूलवतन, सूक्ष्मवतन, फिर इसका चक्कर। ये चक्कर कैसे फिरता है? इसमें ईस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आते हैं, वृद्धि को पाते हैं। जब दुनिया पुरानी हो जाती है तब बाप को आना ही पड़ता है; क्योंकि नई सृष्टि फिर रिपीट होने की है। अभी तो देखते हो, विनाश सामने खड़ा है। हम सारी दुनिया की रिपीटेशन कैसे होती है सो समझा सकते हैं। ऐसे और कोई भी मनुष्य नहीं है, न कोई शास्त्र है, जिसमें ये रिपीटेशन का कोई एक्युरेट राज़ हो। वो धुक्के लगाए हुए हैं। जैसे नंबरवन धुक्के पहले ही लगाय दी– ईश्वर सर्वव्यापी है। खेल खतम। पीछे कहते हैं गीता का भगवान यह श्रीकृष्ण था। अभी भगवान इनको कहा ही नहीं जाता। भगवान तो सुनाया ना, निराकार ऊँचे ते ऊँचा, जिसको कोई भी अपना शरीर नहीं है। तो जबकि उन पतित–पावन, ज्ञानसागर को आना है सुनाने तो ज़रूर लोन लेते हैं। वो खुद आकर कहते हैं मैं प्रकृति का आधार लेता हूँ। ...अच्छा, अभी देखो ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। जो जरूर आत्मा को ; ब्रह्मा द्वारा कैसे करेंगे? ज़रूर उसमें प्रवेश करेंगे, तो भी क्या करेंगे! यह तो समझाने की बात हुई ना। आत्माएँ तो सभी शरीर में प्रवेश करती हैं। और–2 आत्माएँ भी शरीर में प्रवेश करती हैं। ब्राह्मणों को भी भोजन खिलाते हैं, फलाना करते हैं। आत्माएँ आती हैं, बरोबर उनको खिलाते हैं। अच्छा, ऐसे भी कोई–2 में अशुद्ध आत्माएँ तो प्रवेश करती हैं, जिसको घोस्ट भी कहा जाता है। वो भी तो आत्मा ठहरी ना, कोई दूसरी चीज़ तो नहीं है ना; क्योंकि शरीर को चलाने वाली सिवाय आत्मा के और क्या हो सकता है! अगर आत्मा नहीं है तो कोई भी कर्मेन्द्रियाँ

बिल्कुल ही काम ही नहीं कर सकती हैं। देखो, कितनी कर्मेन्द्रियाँ हैं, खतम हो जाती हैं। तो बाप बैठ करके ये सभी बातें बच्चों को समझाते हैं कि बुद्धि में रखो और अच्छी तरह से कहाँ भी भाषण करना हो एकदम नए–2 में तो उनको बताओ कि हम आपको ये सारा सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, परमपिता परमात्मा का परिचय देते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन– हम सारी इस दुनिया के आदि,मध्य,अंत का समाचार सुनाते हैं यानी कि ये सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। यह बड़ी समझानी। ऐसे कोई समझाय न सके। हम इस सृष्टि के आदि,मध्य,अंत, सतयुग से लेकर कलहयुग के अंत तक का समाचार ... जिस सृष्टि के चक्र को समझने से तुम चक्रवर्ती विश्व का मालिक बन सकते हो; परन्तु ये समझते हो ना कि विश्व के मालिक पवित्र थे तो ज़रूर पवित्र ही बनना पड़े; क्योंकि पतित हो ना। तो देखो, पतित को ये पावन बनाय चक्रवर्ती राजा बनाते हैं। वो तो बाप ही ... हैं ना। तो देखो, हम पतित से पावन बना रहे हैं बाप द्वारा, पावन भी बन रहे हैं और फिर चक्कर को जानने से पढ़ाई से...। उसका अर्थ ही है दोनों का दो बात– मन्मनाभव, मद्याजीभव। नटशेल में पिछाड़ी में मन्मनाभव, मद्याजीभव का अर्थ क्या है? देह के सभी धर्मों को भूल अपन को आत्मा निश्चय कर मामेकम् अपने परमपिता परमात्मा को याद करो, जो ये नॉलेज दे रहा है; क्योंकि मुझे नॉलेजफुल कहते हो। मनुष्य सृष्टि का बीज–रूप हूँ तो मुझे ही नॉलेज है, और तो कोई में नॉलेज हो ही नहीं सकती है। इसमें भी बिल्कुल नहीं। सतयुग से ले करके अभी तुम नॉलेज लेते हो, तुम अपना प्रालब्ध प्राप्त कर लेते हो। पीछे तो नॉलेज की दरकार नहीं है। पीछे...पावन बन जाते हो। तो देखो, पतित...को पावन यहाँ बनाना पड़ता है। नॉलेज भी यहाँ देनी पड़ती है। वहाँ तो नॉलेज नहीं देनी है ना। इसको ही कहा जाता है संगमयुग। ये संगमयुग का ..समय है पिछाड़ी में, जिसमें बाप आते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे कलहयुग में आते हैं। ऐसे नहीं कहेंगे सतयुग में आते हैं। संगम पर हम पतित से पावन बन, अपना बाप से पुरुषार्थ अनुसार वर्सा ले करके फिर वहाँ जाकर पद पाते हैं। पीछे देखो सूर्यवंशी राजा–रानी, प्रजा फलाना, ये जो–2 जैसा पढ़ता है ऐसा वो पद पाता है। तो मनुष्य की बुद्धि में ये सृष्टि का सारा समाचार और बाप का परिचय कि उनसे ही हमको ये वर्सा मिल सकता है। फिर पिछाड़ी में मेहनत भी तो है ना। देखो, न चाहते हुए भी कितने तूफान आते हैं। कई ये बताते नहीं हैं। कई गिर भी पड़ते हैं, बताते भी नहीं हैं। कई जो बिचारे सच्चे हैं वो बाबा को बताते हैं कि बाबा, इतने तूफान...। देखो, बाबा खुद कहते हैं ना। रात को पूछा ना– सबसे जास्ती योग किसका लगता है? बच्चों का या बाप का, जो एक ही अकेला बाप का बच्चा है, जिसमें प्रवेश करता है? उनको तो ज़रूर और ही मदद मिलती होगी। वो तो घड़ी–2 कहेंगे, इनको भी कहते हैं– अरे भाई, मोह शिवबाबा के रथ को तो तुमको शिव याद पड़े। अभी समझाता रहता हूँ। मैं खुद फिर चाहूँ कि नहीं, मैं बैठ करके याद करूँ। अच्छा, मैं बैठता हूँ तो मेरे पास तो अनेक प्रकार के बड़े तूफान आते हैं। सारा ये सेन्टर्स का समाचार, ये बच्चों का, इनको दुःख हुआ, ये हमको बनाना है, ये करना है, ये कहता है मेरी तो नींद ही फिट जाती है। प्रश्न पूछा कि ऐसे मत समझना, भले पहले नंबर में जाता हो; क्योंकि सर्विस भी तो करते रहते हैं ना; परन्तु वो जो गाया जाता है ना जिनके मत्थे मामला से किया...। ये सिंधी में पहाका है। भई, तुम लोग तो अभी सिंधी ही बैठे हुए हो। कोई एक/दो ... है। ये गाया जाता है ना। अभी देखो मामला किसके सिर पर है? अभी शिवबाबा के तो सिर पर मामला नहीं है, उसकी तो नींद नहीं फिटेगी। नींद का तो उनके साथ ताल्लुक नहीं है। तो ये जो गाया जाता है जिसके मत्थे मामला .....। अभी कितना बड़ा मामला है सिर के ऊपर। देखो, कितने बच्चे तंग करते हैं, कोई नुकसान करते हैं, कोई खराब हो पड़ते हैं, क्या करते हैं। ये कैसा होगा, ये होगा, ये होगा। अभी क्या करना है बच्चों के लिए! अच्छा भई, मकान तो बनना है। घड़ी–2 बच्चों को कहाँ लेवें। टाकीज़ फलाना। ये मकान वाला मामला करता है, बिचारों को और क्या तकलीफ होती होगी, राय देनी होगी। तो एकदम बड़ा मामला हुआ ना। तभी बाबा कहते हैं कि देखो, भले बाबा को ऊँच मिलते हैं। बाप की प्रवेशता होती है। भाग्यशाली रथ कहते हैं; परन्तु नहीं, फिर भी बच्चों को तो सहज है ना। वैसे ही अज्ञान काल में भी जिनके मत्थे मामला.....मामला होता है बाप के ऊपर, जब तलक कि बच्चे बड़े हों, कोई अच्छी .. लगे।

कोई बच्चा खराब हो गए, बाप की आबरू ही चट। बाप जीते जी उनको धंधा देता है और चलो वो घाटा डाल देते हैं, तुम समझते हो बाप को...। भले निर्वाण में भी बैठा हो, वानप्रस्थ में बैठा हो, उनको मालूम पड़े तो उनकी वानप्रस्थी अवस्था ही डगमग हो जाएगी। जाकर सुनेगा हमारे बाप(बच्चे) ने देवाला निकाला, उनकी वो वानप्रस्थ अवस्था में, साधु–संतों के संग में भी उनकी नींद फिट जावे; क्योंकि उनके ऊपर बड़ा मामला है। हमारी आबरू गुमाय दी। तो ये भी होता है ना। तो बापदादा की आबरू गुमाते हैं। देखो, कितने गंद करते हैं, क्या करते हैं, क्या का क्या करते हैं। गाया भी तो जाता है ना और उनके ऊपर मामला भी है बरोबर। कैसे भी करके, कुछ भी करके, सहन भी कर–करके बच्चों को उनको सम्भालना है। ये बंधायमान हैं अपनी क्रियेशन की पूरी सम्भाल करने। इस समय में सम्भाल करना बड़ी मुसीबत है। सतयुग में तो तुम यहाँ से वर्सा पा जाते हो, यह क्वेश्चन ही नहीं उठता है कि बड़ों को कोई तकलीफ हो या जिनके ऊपर मामला .... वहाँ ये बातें नहीं होती हैं। ये सब बातें यहाँ की हैं। वहाँ तो आराम से राज्य मिलता है। कहाँ ये बातें ही नहीं होती हैं। नींद फिटने की ये सब बातें यहाँ की हैं। सो बाप बैठ करके ये सभी बातें समझाते हैं, तो ये समझो। ये तो हुआ तुम बच्चों के लिए जो सुनते हैं। बाकी समझाने के लिए तो पहले–2 उन लोगों को ऊपर में सारा ये चक्कर समझा दो। तो उनकी बुद्धि में...। बोलो– देखो, ये चक्कर फिरने से...। ये कोई वो चर्खा की बात नहीं है। ...चर्खा फिरा करके कुछ शरीर निर्वाह करें; इसलिए उन्होंने चर्खा निकाल दिया है; परन्तु ये कोई चर्खे की तो बात नहीं है ना। ये तो सृष्टि के चक्कर को सुनना है। चक्रवर्ती राजा बनना है। तो सृष्टि के आदि,मध्य,अंत को जानना है...। ये नॉलेज बहुत बड़ी है। तो ये आदि,मध्य,अंत की नॉलेज तो बाप ही बताते हैं, और तो कोई की ताकत ही नहीं है; क्योंकि राजयोग है। अच्छा, तुम सन्यासी और ये राजयोग तो सिखला नहीं सकते। हठयोगी हैं। इनकी तो बात ही बिल्कुल हटा दो कि ये कोई भारत को स्वर्ग बना सकते हैं या भारत को श्रेष्ठाचारी बना सकते हैं। ये तो खुद ही, इनको भ्रष्टाचारी कहेंगे; क्योंकि भ्रष्टाचार से इनका जन्म होता है। जो पवित्रता है वो तो सतयुग में है। वो तो कभी भी भ्रष्टाचार से...। वहाँ तो विकार ही नहीं है। तो वो सन्यास सच्चा। पवित्र तो वो रहते हैं। उसको पवित्र दुनिया कहते हैं। इनको तो पवित्र दुनिया ...। भले तुम लोग पवित्र भी रहते हो, फिर भी पुनर्जन्म लेते हो, फिर भी तो विख से पैदा होंगे ना। तो विख से पैदा होने वाले को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है। अगर ऐसा न होता, अच्छा, तुम समझते हो .. यह शरीर भ्रष्टाचार से पैदा... पर शरीर भ्रष्टाचारी होता है ना, तभी स्नान करते हैं ना। वो लिखा हुआ है। ये भी लिखा हुआ है वहाँ कि ये सन्यासी क्यों करते हैं! ये शरीर का पाप धोने के लिए। इसमें वो जो बाबा ने दिखलाया ना, कुम्भ का मेला कहाँ अख़बार में ऊपर में लिखा हुआ है। तो उनमें यह लिखा हुआ है कि ये सब उसमें स्नान करते हैं कि ये जो पाप हैं वो सभी उसमें स्नान करने से कट जाते हैं। फिर उनमें बहुत ही आखानियाँ निकली हैं कि कौन है वो जो गुप्त है! उनको कैसे करके लिखा है। अरे, वो तो गिटगिट लिखी है। बाकी है तो कुछ भी नहीं। कोई भी कहे कि नहीं, यहाँ नीचे में निकलती है या ...को साफ करते हैं। ये सब गपोड़े हैं। बहुतों ने लिखा हुआ है कि ये इनका कचरा खा जाती है, वो जो गुप्त है। जो स्नान करते हैं वो पाप खा जाती है, गुप्त बैठी हुई है। बहुत कुछ लिखा हुआ है। तुम लोगों ने पढ़ा नहीं है। हम कभी–2 देखते हैं तो पढ़ते हैं। वहाँ तो सब गपोड़े। समझा ना। यहाँ तो तुम सब नई बात नई दुनिया के लिए। एवरीथिंग न्यू। देखो, ये नॉलेज सुनाने वाला न्यू। नो भगवान कृष्ण, बाप। तो नई बात हो गई ना। तो बिचारे मूँझते हैं। शास्त्रों में ये लिखा हुआ है और हम पढ़े ही शास्त्र हैं। और तो हम कहाँ से सुन कैसे सकें। कोई ऐसे तो नहीं कोई भगवान इनको सुनाते हैं। नहीं, शास्त्र से वो सुनते हैं। शास्त्रों के लिए तो बाप ने आ करके फट से बता दिया कि ये हैं भक्तिमार्ग के। इनमें बैठ करके कितना बनाया है देखो, विचार तो करो! ... किया है व्यास ने, अगर कहते हैं उन्होंने बनाया है। तो ये आखानियाँ बैठ करके बनाई हैं देखो क्या ; परन्तु नहीं, ड्रामा में बनावट है ऐसे। इसलिए ये फिर से बनेगा। वण्डर तो खाते हैं ना– क्या इतना व्यास ने बैठ करके, ये इतना रामायण फलाने ने बनाया, डाकू ने बनाया, सूरदास ने बनाया। ये भला क्या बनाया ऐसे! अंधे की औलाद अंधे

ही थे जो बरोबर ये सभी बैठ करके बनाया– रावण की कथा और फलाने की कथा। तो देखो, भक्तिमार्ग हुआ ना। तो वो बताना चाहिए भक्तिमार्ग में ये सब जो भी वेद,शास्त्र... पढ़ते–2...। अच्छा, वेद पढ़ते हैं, क्या सद्गति ...? वो भले कहे...। सबका बाप तो वो है ना। हम सभी आत्माएँ, वो बाप तो है ना, वो नॉलेजफुल भी है और पतित–पावन भी उनको कहेंगे ना। तो वो पतित–पावन के लिए ज़रूर कोई शरीर धारण करेगा। तो देखो, यह शरीर धारण किया है ना। उन्हों द्वारा देखो हमको पढ़ा रहे हैं। ब्राह्मण चोटी फर्स्ट चाहिए ज़रूर। पीछे देवता,क्षत्रिय,वैश्य,शूद्र– ये 84 जन्म भी तो हैं ना। यह है वन जन्म, एक ब्राह्मणों का जन्म, सबसे ऊँचे ते ऊँचा जन्म, लीप जन्म। उसको कहा जाता है कल्याणकारी। वो जो युग होता है ना, तो इसको भी कल्याणकारी युग...। मास भी होता है। ये भी है संगमयुग, इसमें फिर ये चोटी ये थोड़ा जन्म। देखो, चोटी कितनी छोटी है। बोलें, ये सर्वोत्तम, इनके ऊपर में शिवबाबा। तो ये ब्रह्मा, ब्राह्मण, ब्राह्मणों की चोटी। बड़ी मौज आती है। जब स्मरण करते हैं तो बड़ी खुशी आती है नॉलेज (की)। अरे, जो बड़ी–2 नॉलेज पढ़ते हैं, नॉलेज को सिमरन करके तो खुश होते हैं ना– इस नॉलेज से हम बैरिस्टर बनेंगे। तुम भी तो ये एक नॉलेज पढ़ रही हो। ये जानती हो कि इस नॉलेज से हम देवता बनेंगे। अभी देवता तो बनेंगे, नंबरवार हैं। बैरिस्टर हैं तो नंबरवार हैं। हर एक बात नंबरवार है। एक जैसे कोई होते ही नहीं हैं। वो ही उसमें देखेंगे कि कोई लाख रुपया कमाते हैं। एक–2 केस में लाख रुपया और दूसरा कोई बैरिस्टर एक–एक में 100/150 भी मुश्किल मिलता होगा। फर्क है। बहुत फर्क रहता है। तुम लोग इतना पढ़े–लिखे नहीं हो, न कोई इस दुनिया में इतना पाती हो। बाबा को तो बहुत ही मालूम है। तो ये भी ऐसे ही है– जितना जो पढ़ेगा, जितना जो श्रीमत पर चलेंगे। श्रीमत को ठोकर लगाई कि अपने पद को ठोकर लगाई। गाया भी जाता है सच्चे दिल पर साहिब राज़ी। अभी सच्ची दिल उसकी है, दिल माना आत्मा, जो बाप को अच्छी तरह से याद करते हैं, उनकी मत पर चलते हैं। वो कोई भी उल्टा काम नहीं करते हैं, जो पीछे खाएगा। उल्टा काम पीछे बड़ा खाएगा। अरे, पिछाड़ी में मनुष्य मरते हैं तो भी कहा जाता है अंत मते सो गत। उस समय में उनको कहते हैं– राम कहो–2; परन्तु राम को वो याद थोड़े ही करते हैं। नहीं, जिसमें मोह होगा, बहू में मोह होगा, बच्चे में मोह होगा, वो घड़ी–2 सामने आ जाएगा। यहाँ भी जो पाप करते रहेंगे वो सभी पाप सामने आकर खड़े रहेंगे; क्योंकि अंतिम जन्म है। हिसाब–किताब पूरा करना है और बहुत पाप करने से पद बिल्कुल ही भ्रष्ट हो जाएगा; इसलिए जब बाबा का बनते हैं तब तो ज़रा भी पाप नहीं करना चाहिए, नहीं तो बाप कह देते हैं हमारा बन करके...। देखो, कोर्ट में कोई मेजिस्ट्रेट का बच्चा पाप करके सामने आते हैं तो हाहाकार मच जाता है। कब बच्चा ने जा करके मुसलमान से शादी की थी ना, विख से हाहाकार मच गया था। दुनिया ऐसी है ना। ...मुझे बाबा कहते हैं कि भई तुम 108 चत्ती का कपड़ा पहनो; क्योंकि अभी तुम्हारा वनवाह है। तुम तो पियर घर हो, अभी ससुरघर जाना है। तो इसमें तुमको... यहाँ सुख लेकर छोड़ेंगे तो फिर वहाँ वो पलंग कब मिलेगा। कहते हैं– बच्चों, भले एरोप्लेन में जाओ, वो तो धंधा है जिसका (तो उ)समें जाना ही पड़ेगा। बाकी तो अपने उस बाप को याद करना है और सर्विस में लगना है। ...भगवानुवाच कहेंगे। नहीं, ये भी तो नहीं कहना होता है। कहते हैं मीठे–2 सिकीलधे बच्चों। अब मीठे–2 सिकीलधे बच्चों का भी अर्थ तुम जानते (हो)। कोई नया बैठा होवे (कहेंगे) ये क्या बोलते हैं मीठे–2 सिकीलधे बच्चों! उनको बच्चे ही कहते हैं। गाया भी गया हुआ है आत्माएँ और परमात्मा अलग रहे बहुकाल। तो जब तुमसे मिलते हैं तो तुमसे ही सन्मुख मिलते हैं; क्योंकि तुमको शिक्षा देनी है। सबसे तो मिल भी नहीं सकेंगे, इम्पॉसिबल है; क्योंकि शिक्षा देनी है तुमको। फिर तुमको सो देवी–देवता पद प्राप्त कराना है ज़रूर ड्रामा के प्लैन अनुसार। और बाकी तो सभी हिसाब–किताब चुक्तू करके अपने मुक्तिधाम में चले जाएँगे। ऐसे थोड़े ही कोई सबसे मत्था मारना पड़ता है। मत्था मारते हैं बाप अपने बच्चों से। ...साकारी बहन–भाई और निराकार भाई–2। तो तुम भाई–2 भी आपस में ठीक हो, वर्सा भी लेते हो। आत्माएँ सब भाई–2 और वर्सा लेते हो। इस हिसाब से वर्सा बाप से लेते हो। बहन–भाई के हिसाब से मेरे से कुछ नहीं मिल सकता है। भाई–2 हो। तो देखो, आत्मा को ज्ञान मिलता है ना। तो वो परमात्मा से लेते हैं; परन्तु शरीर ज़रूर धारण करना है ना, तो इसलिए शरीरधारी को ही एडॉप्ट किया जाता है। अच्छा! सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमॉर्निंग।